सज्दा – ए – सह्व का तरीका

हमारे मुल्को हिन्द व पाक मे सज्दा ए सह्व का जो तरीका है वो ये है कि आखरी रकअत मे तशहद्दूद मे अत्तहियात व दूरूद के बाद एक तरफ सलाम फेरकर फिर दो सज्दे किये जाते है,फिर अत्तहियात दुरुद व दुआ के बाद दोनो तरफ सलाम फेरकर नमाज़ से फारिग हुआ जाता है । क्या ये तरीका सुन्नत से साबित है? जी हां ये तरीका सुन्नत से साबित नहीं है । आईये देखते है इंसानियत के निजात दहिन्दा सरवरे कायनात मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सज्दे सह्व के मसले पर अपने कौल व अमल से क्या हल बताया है :–

मुत्तफकुन अलैहि हदीसे (यानि बुखारी व मुस्लिम) की हदीसो से साबित है कि सज्दे सह्व जब नमाज़ मे शक पड़ जाये उस वक्त किया जाता है और उसका तरीका ये है कि आखिरी तशह्दुद मे अत्तहियात, दुरूद, दुआ के बाद दो सज्दे सह्व के किये जाये और फिर सलाम फेर दिया जाये । आईये दलील के तौर पर हदीसे देखे :–

हदीस नं0 1

हज़रत अबू सईद खुदरी रजि0 ने कहा कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''अगर तुम मे से किसी को रकअतो की तदाद के बारे मे शक पैदा हो जाये कि तीन पढ़ी या चार ? तो शक को छोड़ कर यकीन पर भरोसा करे । फिर सलाम फेरने से पहले दो सज्दे करे । अगर उस ने पांच रकअते पढ़ी थी तो यह सज्दे उस की नमाज़ की रकअतो को ताक बना देगे । और अगर उसने पूरी चार रकअत पढ़ी थी तो सज्दे शैतान के लिये. जिल्लत का सबब होंगे । (सहीह मुस्लिम,

किताबुल मसाजिद, हदीस नं0 571)

हदीस नं0 2

''जिसको नमाज़ मे यह शक हो जाये कि उसने एक रकअत पढ़ी है या दो ? तो वह उस को एक रकअत यकीन करे । और जिसको यह शक हो कि उसने दो पढ़ी या तीन ? तो वह उसको दो रकअत यकीन करे । और फिर आखिरी कादे मे सलाम फेरने से पहले सह्व के दो सज्दे करे । (सुनन तिर्मिजी, किताबुस्सलात हदीस नं0 398, इब्ने माजा हदीस नं0 1209)

सज्दे सह्व का तरीका यह है कि आखिरी कादे मे तशह्हुद दुरूद और दुआ पढ़ने के बाद अल्लाहु अकबर कह कर सज्दे मे जाये फिर उठ कर जल्से मे बैठ कर दुसरा सज्दा करे और फिर उठ कर सलाम फेर कर नमाज़ से फारिग हो । ऊपर बयान की गई हदीस मे सलाम फेरने से पहले सज्द – ए – सह्व का हुक्म है, इसलिये सह्व के दो सज्दे सलाम फेरने से पहले करने चाहिये ।

पहले कादा के तर्क पर सज्दा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुजैना रजि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को जुहर की नमाज़ पढ़ाई तो पहली दो रकअते पढ़ कर खड़े हो गये (यानि कादा मे भुल कर नहीं बैठे) तो लोग भी नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ खड़े हो गये, यहां तक कि जब नमाज़ पढ़ चुके (और आखिरी कादे मे सलाम फेरने का वक्त आया) और लोग सलाम

फेरने का इन्तिज़ार करने लगे तो नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तकबीर कही जबकि आप बैठे हुये थे । सलाम फेरने से पहले दो सज्दे किये फिर सलाम फेरा।'' (सहीह बुखारी, सिफतिस्सलात, हदीस नं0 829, 830, 1224, 1225, 1230, सहीह मुस्लिम हदीस नं0 570)

लेहाज़ा नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस अमल से साबित हुआ कि सज्द –ए-सह्व सलाम फेरने से पहले करना चाहिये ।

मुहद्दिसो का उसूल है कि हदीसे तीन तरह की होती है यानि फेअली, कौली, और तकरीरी(यानि मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने कोई काम किया जाये और हुजुर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर खामोश रहे तो यह जायज़ होगी वरना आप सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम उस काम से रोक देगे) इन हदीसो मे कौली हदीसे सबसे ज्यादा हुज्जत होती है अगरचे फेअली हदीसे इसके खिलाफ ही क्यो न हो । यहां फेअल और कौल दोनो सलाम फेरने से पहले सज्दे सह्व करने को हुज्जत करार दे रहा है । लेहाज़ा जरूरी है कि इस अमल पर नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की ही इतआत की जाये ।

नमाज से फारिग होकर बात कर चुकने बाद सज्दा सह्व

हज़रत इमरान बिन हुसैन रजि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अस्र की नमाज़ पढ़ाई और तीन रकअत पढ़ कर सलाम फेर दिया और घर तशरीफ ले गये । एक सहाबी खिरबाक रजि0 उठ कर आप के पास गये और आप से सह्व का जिक्र किया तो आप तेज़ी के साथ लोगो के पास पहुंचे और खिरबाक़ रजि0 के कौल की तसदीक चाही, तो लोगो ने कहा खिरबाक़ रजि0

सच कहते है । फिर आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक रकअत पढ़ी फिर सलाम फेरा और फिर दो सज्दे किये फिर सलाम फेरा ।(मुस्लिम किताबुल मसाजिद हदीस नं0 575)

चार की जगह पांच रकअत पढ़ने पर सज्दा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0 रिवायत करते है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुहर की नमाज भुलकर पांच रकअत पढ़ा दी । जब आप से पूछा गया क्या नमाज़ मे ज्यादती हो गयी है ? तो आप ने फरमाया क्यो ? सहाबा ने कहा आप ने जुहर की पांच रकअते पढ़ाई है । फिर आप ने सलाम के बाद दो सज्दे किये (यानि सिर्फ सज्दे किये, सज्दे के बाद सलाम नहीं फेरा) और फरमाया ''मै भी तुम्हारी तरह इंसान हूं, मै भी भुलता हूं जैसे तुम भूलते हो, इसलिये जब भूल जाऊं तो मुझे याद दिला दिया करो । (सहीह बुखारी किताबुस्सलात हदीस नं0 401, सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद हदीस नं0 572)

सज्द-ए-सह्व सलाम से पहले या बाद करने का जिक्र तो अहादीस मे आप पढ़ चुके है । लेकिन सिर्फ एक तरफ सलाम फेर कर सज्दा करना और फिर अत्तहिय्यात पढ़ कर सलाम फेरना सुन्नत से साबित नहीं है ।

अगर इस बाब मे हज़रत जुलयदैन रजि0 की हदीस (बुखारी हदीस नं0 1229) को भी शामिल कर लिया जाये तो इन तमाम रिवायतो का निचोड़ ये निकलता है :-

(1) जब इमाम सज्दा-ए-सह्व किये बिना सलाम फेर दे और मुकतदी उसे याद दिलाये तो वह बाकी रह गयी रकअतो को पढ़ाएगा और सलाम फेरने के बाद सज्द-

ए–सह्व करेगा ।

(2) और अगर मुक्तदी उसे यह याद दिलाये कि हम ने एक रकअत ज्यादा पढ़ ली है, तो भी ज़ाहिर है कि सलाम तो फेर चुका है, अब उसे सिर्फ सज्द–ए–सह्व ही करना है ।

(3) और अगर रकअतो की तादाद मे शक हो जाये, या कादा छुट जाये, या फिर कोई अरकान छुट जाये तो फिर सलाम से पहले सज्द–ए–सह्व करेगा ।

(4) अगर नमाज़ी को किसी वजह से यह अहकाम जो बयान किये गये, या वह ऐसी भूल का शिकार हो गया जो इन अहादीस मे बयान नहीं है तो फिर उसे जान लेना चाहिये कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम से पहले भी सह्व के दो सज्दे किये है और सलाम फेरने के बाद भी वह जिस सूरत पर भी अमल करेगा अल्लाह तआला उसे कुबूल कर लेगा –इंशाअल्लाह तआला (वल्लाहू आलम)

''व आखरूद्दवानि वल्हम्दुलिल्लाहे रब्बीअल आ–अलमीन''

इस्लामिक दावाअ सेन्टर,

रायपुर छत्तीसगढ़